कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) | क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में - ----

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय .... संस्कृत साहित्य ....

परीक्षा का दिन .... शुक्रवार ....

दिनांक .... 26 - 06 - 2020 ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निदश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों मे
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर :

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज़ ही उपयोग में लिया गया है। 167/2020

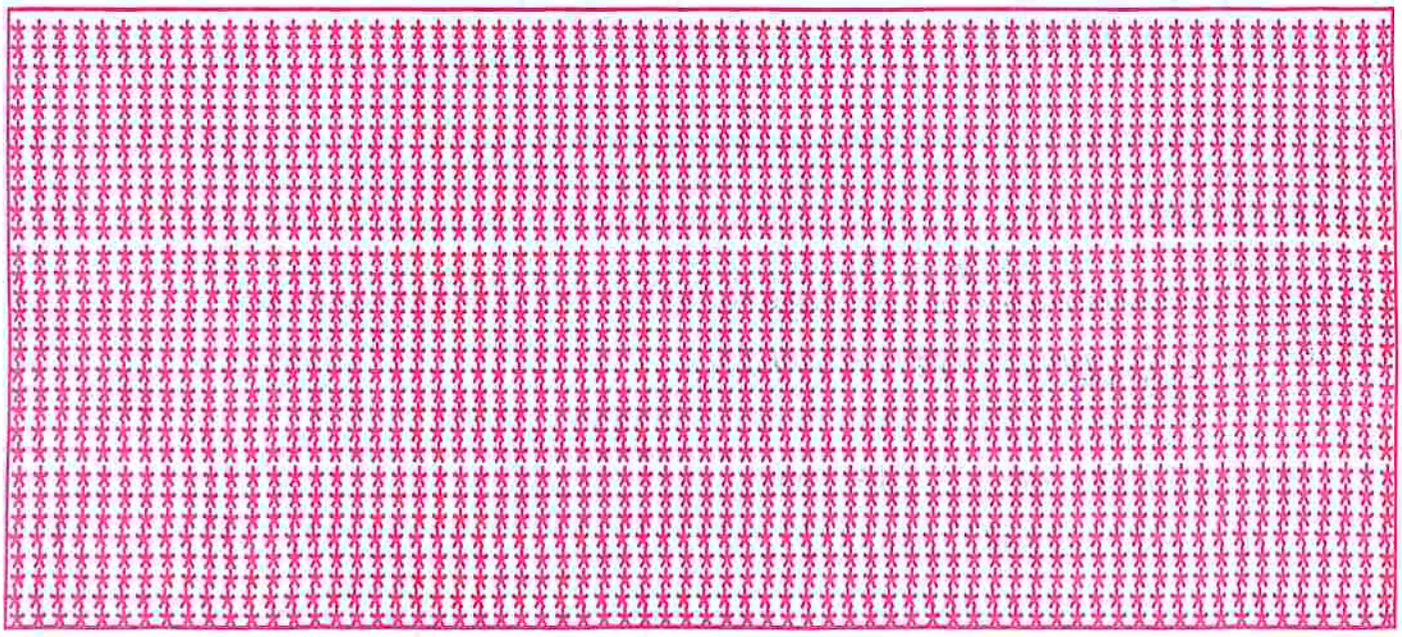

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	1	(क) "माता"
		(ख) चित "तृणात्" बहुतरी वर्तते।
		(ग) रवात्
		(घ) "शीघ्रतरं"
	2	(क) "सदाखिग"
		(ख) वशिष्ट: लोकललाम "दिलीपस्य" कुलगुरु आसीत्।
		(ग) 'लोकललाम: दिलीप:' इत्यत्र विशेषणपदं "लोकललाम" अस्ति।
		(घ) 'समुद्र:' इत्यस्य पर्यायपदं "पयोधि" अस्ति।
	3	(क) "सीतायाः"
		(ख) 'आर्यपुत्र:' इति शब्द "रामस्य" कृते प्रयुक्त।
		(ग) "आर्यपुत्र:"
		(घ) "कुशलवयो:"
	7	(क) समवाय = समूह, समुदाय
		(ख) भृशम् = अत्यधिक
	8	पूज्यमानाः अपि देवता: न ते प्रसीदन्ति इत्यत्र प्रसीदन्ति इति क्रियाया कर्ता "देवताः" अस्ति।
	9	'अपरिमाणो पशमो दारुणो लक्ष्मीमदः' इत्यत्र विशेष्यपदं "लक्ष्मीमद:" अस्ति।
	10	'सः तस्य समन्तात् परिभ्रमति।' इत्यत्र सः सर्वनामस्थाने "शृंगाल:" प्रयोग कुरुत।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(11) "त्वं मां त्यक्त्वा किमर्थम् अत्र आगतवती?" इति वाक्यं बालकः पितामहः कथयति।

(12) शत्रुः, अरि

(13) 'मानवाः सर्वत्र विजयं कामयन्ते।' इत्यत्र कामयन्ते क्रियापदस्य कर्तृपदं "मानवाः" अस्ति।

(6) अन्वयः यः माम् सर्वत्र पश्यति, सर्वं च मयि पश्यति। तस्य अहं न प्रणश्यामि सः च मे न प्रणश्यति॥

अर्थः => भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि इस संसार मे जो व्यक्ति मुझे सभी जगह या सभी में देखता है तथा सभी को मुझ में देखता है। उस व्यक्ति के लिए मैं कभी भी अदृश्य नही होता तथा वह व्यक्ति मेरे लिए भी कभी अदृश्य नही होता। इस दोनो एकीभाव से रहते है अर्थात इस संसार में जो भी व्यक्ति मुझे अन्य मानवो, जन्तुओं अन्य सभी जगह देखेगा तथा उन को मुझ में देखेगा वही मेरा प्रिय भक्त होगा। भगवान श्रीकृष्ण सब जगह व्याप्त है। लेकिन उनका सच्चा भक्त ही उन्हे देख पाता है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

~~18 लक्षण : "ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः" नगण सगण~~

20 निदर्शना

~~लक्षण : अभवन् वस्तुसंबंध उपमा परिकल्पक निदर्शना भवेत् सैव्यम मम्मतेन यथोदिता "~~

~~उदा "क्व सूर्यप्रभवः वंश, क्व चाल्पविषयामति तितिर्षुर्दुस्तरं मोहोदुडोपेनास्मि सागरम् "~~

(21) (ख) "अनुप्रासः"

"लक्षण" "अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत् "

(19) मगण तगण तगण गु. गु.

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

सा निन्दन्ति स्वानि भाग्यानि बाला ।

छन्दः : ~~इन्द्रवज्रा~~ शालिनी छन्द

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(23) क "सोमिलको"
ख "सोमिलको नाम तन्तुवायस्य"
ग सोमिलको नाम तन्तुवायस्य नगरस्य अन्ये सामान्याः तन्तुवायाः केवलं स्थूलवस्त्राणां निर्माणं जानन्ति स्म
(घ) "आसन्"
(ङ) "अत्युत्तमानि"

(30) (क) चोरात् भयम् = चोरभयं
समास पंचमीतत्पुरुष समास)
(ख) हरिश्च हरश्च = हरौ
समास (द्वन्द्व समास)

(29) (क) अधिहरि = हरौ इति
समास = (अव्ययीभाव समास)

ख दशाननः = दश आननानि यस्यः सः
समास (बहुव्रीही समास)

(28) (क) द्वितीया विभक्ति, सूत्र "अधिशीङ्स्थासां कर्म"
ख पंचमी विभक्ति, सूत्र "जनिकर्तुः प्रकृतिः"
ग चतुर्थी विभक्ति, सूत्र "कर्मणायमभिप्रैति सः सम्प्रदानं"

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(घ) सप्तमी विभक्ति
सूत्र = "यतश्च निर्धारणम्"

(27) क महा + इन्द्रः = महेन्द्रः
सूत्र = आद्गुणः

ख गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः
सूत्र = "वृद्धिरेची"

(26) क हरये = हरे + ए
सूत्र = "एचोऽयवायाव"
ख विष्णूदयः = विष्णु + उदयः
सूत्र "अकः सवर्णे दीर्घः"

18 क इन्द्रवज्रा
लक्षण : "स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः"
(तगण ऽऽ। तगण ऽऽ। जगण ।ऽ। गु ऽ गु ऽ)

उदा

अर्थो हि कन्या परकीय एव :
(तगण ऽऽ। तगण ऽऽ। जगण ।ऽ। गु गु)

तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतु
(तगण ऽऽ। तगण ऽऽ। जगण ।ऽ। गु गु)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

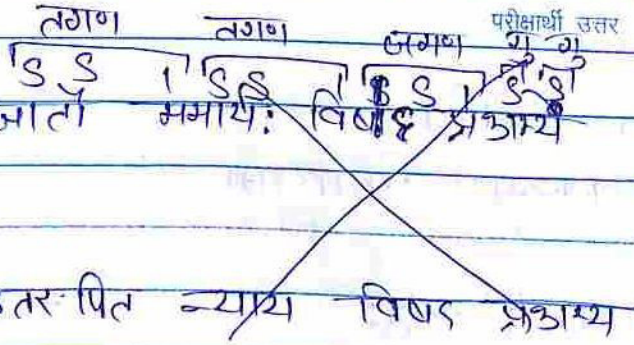

तगण तगण जगण ग ग

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

~~जातो ममार्थः विशद प्रकाम्यं~~

इतर पित न्याय विशद प्रकाश्य

(14) वेदाङ्गानि षड् सन्ति।
(i) शिक्षा (ii) कल्प (iii) व्याकरण (iv) ज्योतिष।
(v) छन्दः (vi) निरुक्त।

व्याकरण = भाषायाः शुद्धयो उत्पादनाय, व्याकरणस्य आवश्यकता वर्तते, व्याकरणे भाषया शुद्धयो कर्तुं नियमाः संकलिता, व्याकरण भाषां शुद्धं करोति, यत वेदाङ्गानि अत्य महत्वं अस्ति।
व्याकरणस्य त्रयः मुनि सन्ति, तेषाम् त्रयः रचनाः सन्ति
(i) पाणिनिः = अष्टाध्यायी — रचनाः
(ii) पतञ्जली = महाभाष्यः — रचना
(iii) ~~वार्तिकः~~ — वार्तिक कात्यायन = वार्तिकः रचना
(15) (i) "प्रतिज्ञायौगन्धरायणं" नाटकं "महाकवि भासेन" विरचितम्।
(ii) इदं नाटकं चतुर्थी अङ्केषु विभक्त अस्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(16) (i) महाकवि बाणेन स्वीया आत्मकथा 'हर्षचरितम्' ग्रन्थे लिखिता।

(ii) एष ग्रन्थः "अष्टेषु उच्छ्वासेषु" विभक्तः।

(17) (क) कृष्णरामभट्टः शास्त्री

(ख) गुलाबचन्दः चूलिः महारथी महाकाव्ये लिखिता महारथी महाकाव्ये 29 (21) सर्गाः सन्ति।

(ग) "हरनामामृतम्" महाकाव्यस्य नायक "हरनामदत्त" आसीत्।

(22) (क) "चोरः"

(ख) चोरस्य मनः इदानीम् "~~ऋषिजीवने~~" "ऋषिजीवने" आसक्तम्।

(ग) शीतलेन नदीजलेन इत्यत्र विशेष्यपदं "नदीजलेन" अस्ति।

(4) (ख) केषाम् अन्तिमो भागः वेदान्तः?

(ग) ग्रामशक्ति कति पुत्राः आसन्?

(घ) कैः स्वार्थं समीहते?

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(5) क सह वीर्यं करवावहै।

सन्दर्भ: => प्रस्तुत वाक्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक "विजेत्री" के पाठ 1 'मङ्गलाचरणम्' से लिया गया है जो वेदोपनिषद् से संकलित है।

प्रसंग => प्रस्तुत श्लोक मे स्तोतु या शिष्य परमात्मा से (गुरु व स्वयं को) एक साथ शक्ति प्रदान करने को कहता है।

भावार्थ => प्रस्तुत श्लोक या वाक्यांश में शिष्य परमात्मा से निवेदन करता है की हम दोनो गुरु शिष्य एक साथ शक्ति या वीर्य को प्राप्त कर तथा वह कहता है कि आप हमारी सब प्रकार से रक्षा करे, तथा हम दोनो द्वारा प्राप्त की गई विद्या कभी नष्ट न हो, हम दोनो आपस में द्वेष न करे प्रेम पूर्वक रहें। इसमे स्तोतु सभी देवताओ से उनका कल्याण करने को कहता है।

विशेष: = (i) वीर्य पर्याय "शक्तिं", सह पर्याय साथ
(ii) इसमे सहज, सरल शब्दों का प्रयोग हुआ है
शिष्य द्वारा परमात्मा से प्रार्थना का वर्णन है।
(iii) सह विलोम पृथक्
(iv)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ख)

सन्दर्भ व प्रसंग ⇒ प्रस्तुत श्लोकांश हमारी पाठ्य पुस्तक "विभेरी" के पाठ "मानवधर्म" से लिया गया है। यह महर्षि मनु द्वारा रचित है। यह श्लोक "मनुस्मृति:" नाम ग्रन्थ से लिया गया है।

इसमें अभिवादन करने वाले व्यक्ति को होने वाले लाभों के बारे में बताया गया है।

भावार्थ : = प्रस्तुत श्लोकांश में बताया गया है कि अभिवादन करने वाले, बड़ो की सेवा करने वाले व्यक्ति के चारो गुण आयु, विद्या, यश और बल बढ़ जाते है। जीवन में अनुशासन का महत्व होता है। जो व्यक्ति सच्चे मन से सभी की सेवा करता है। अभिवादन करता है वह निश्चित ही उत्तम फल प्राप्त करता है। अत: हमे सभी का आदर सम्मान करना चाहिए, इससे हमारे चरित्र का विकास होता है। अभीवादन करने वाला व्यक्ति जीवन मे उन्नति करता है।

विशेष : = (i) इसकी भाषा भावानुकुल है।

(ii) इसमें अभिवादन करने वाले व्यक्ति के चारो गुणो के बढ़ने के बारे में बताया गया है।

(iii) वर्धन्ते = अभिवर्धते (पर्याय)

(iv) यश = कीर्ति (पर्याय)

यश (विलोम) अपयश

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(23) (क) अहं दुग्धं पिबामि ।
(ख) सः मित्रैः सह उद्याने क्रीडति ।
(ङ) बालकः अश्वात् पतति ।
(ग) मार्गं अभितः वृक्षाः सन्ति ।
(घ) राजेशः महाविद्यालये पठिष्यति ।

(24) (झ) एकस्मिन् वने एक शशकः आसीत् ।
(ञ) एकदा सः मंदं - मंदं गच्छन्तं कच्छपम अपश्यत् ।
(ज) शशकः कच्छपस्य उपहासम अकरोत् ।
(ङ) एकदा तयोः मध्ये धावन प्रतिस्पर्धा अभवत् ।
(छ) तस्य वेगः तीव्र आसीत् अतः सः गर्वितः अभवत् ।
(ख) शशक तीव्रवेगेन धावयित्वा श्रान्तः जातः ।
(च) सः एकस्य वृक्षस्य छायायाम अतिष्ठत्, शीघ्रमेव निद्राधीनश्च अभवत् ।
(घ) कच्छपः मंदं - मंदं किन्तु निरंतं चलन् लक्ष्यं प्राप्तवान् ।
(क) किञ्चित कालान्तरं शशकः अपि जागयित्वा तत्र उपागच्छत् ।
(ग) कच्छपः लक्ष्यं प्राप्तवान् इति दृष्ट्वा शशकः लज्जितोऽभवत् ।

BSER-167/2020

क द्वारा त्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(20) रूपकम्

लक्षण : "तद् रूपकं अभेदो य: उपमानोपमेयो"

उदा. "संसार विषवृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले।
काव्यामृतं रसास्वाद संगम सज्जनै: सह"॥

(18) छन्द मन्दाक्रान्ता

लक्षण मगण भगण नगण तगण तगण ग. ग.
S S S S I I I I I S S I S S I S S
मन्दाक्रान्ताम्बुधि रसनगैर्मो भनौ तौ ग्युग्मम्।

उदा.

S S S S I I I I I S S I S S I S S
अध्याक्रान्ता वसतिरमुनाऽप्याश्रमे सर्वभोगे

S S S S I I I I I S S I S S I S S
रक्षायोगादयमपि तप: प्रत्यहं संचिनोति

S S S S I I I I I S S I S S I S S
अस्यापि द्याम स्पृशयति वशीचारण द्वन्द्वगीत

S S S S I I I I I S S I S S I S S
पुण्य: शब्दो मुनि रिति मुहु: केवलं राजपूर्व

समाप्त